बाघ की रीति-नीति

रॉबिन जेनसन द्वारा लिखित कहानी

चीनी राशि चक्र बारह वर्षीय चक्र होता है, जिसकी पुनरावृत्ति होती रहती है। एक पशु हर वर्ष का प्रतीक होता है और ऐसा कहा जाता है कि उस वर्ष में जन्मे लोग उस पशु के गुणों को प्रतिबिम्बित करते हैं।

वर्ष २०२२ में, चन्द्रतिथि के कैलेन्डरनुसार चीनी नववर्ष मंगलवार, १ फ़रवरी को मनाया जा रहा है जो चीनी राशि चक्र का तीसरा वर्ष है और इसका नाम 'व्याघ्र-वर्ष' यानी 'बाघ का वर्ष' है।

चीन में बाघ को पशुओं का राजा माना जाता है जिसे अपने बल, पराक्रम, शक्ति और शूरवीरता के लिए मान दिया जाता है। इसी तरह, ऐसी मान्यता है कि व्याघ्र-वर्ष में जन्मे लोग पराक्रमी व शूरवीर होते हैं, उनमें आत्मविश्वास होता है और साथ ही ये लोग धीरता, नेतृत्व, मैत्रीभाव और मनोहरता के गुणों से भी सम्पन्न होते हैं।

दरवाज़े के पास खूँटी पर टँगी दो बड़ी-सी बालटियाँ उतारकर, वह युवक पानी लाने के लिए गाँव के बाहरी इलाक़े की ओर जल्दी-जल्दी जाने लगा। बालटियों के भार से उसकी मांसपेशियाँ तनी थीं; दोपहर की चिलचिलाती गर्मी में चौसर खेल रहे राजा के सिपाहियों तक उसे पानी पहुँचाना था।

जाते-जाते, रास्ते में उसे कुछ और सिपाही दिखाई दिए जो राजा द्वारा लगाए गए कर की वसूली करने के लिए गाँववालों के अनाज पर कब्ज़ा कर रहे थे। गाँववाले भीख माँग रहे थे कि उनके पास अपने परिवार तक को खिलाने के लिए धान नहीं है; यह देखकर उसे बहुत दुःख हो रहा था। परन्तु यहाँ रहम की तो कोई गुंजाइश ही नहीं थी। कर लगाने वाला वह राजा बड़ा ही क्रूर, अत्याचारी था; उसके शासन में लोग भूखे मर रहे थे। एक समय था जब यह गाँव सुख-समृद्धि से परिपूर्ण, बड़ा ही खुशहाल हुआ करता था, परन्तु अब इस राजा के शासन में, इस गाँव को बहुत कठिन समय का सामना करना पड़ रहा था। गाँव के ध्वज पर चिह्नित महाशक्तिशाली बाघ जो कभी यहाँ के लोगों की ज़िन्दादिली को दर्शाता हुआ पराक्रम को जगाया करता, अब भय को जगाता था।

उस युवक के दिल की चिनगारी भड़क उठी और उसने क़सम खाई कि वह अपने परिवार और पड़ोसियों की इस व्यथा को दूर करेगा। बस अगर वह 'टाइगर माउन्टेन' [बाघ का पहाड़] की चोटी तक पहुँच जाए तो काम बन जाएगा! अयनान्त का समय था; आज रात अच्छा अवसर था!

ज़िन्दगी भर उसकी दादी माँ ने उसे बाघ की कहानी सुनाई थी—कि किस प्रकार हर बारह वर्ष बाद ग्रीष्म अयनान्त की पूर्वसन्ध्या पर गाँव के युवक विशाल सफ़ेद बाघ की तलाश में उस पावन पर्वत पर चढ़कर जाते थे। जिसका भी बाघ से सामना होता और जो उस खूँखार जानवर की कोई निशानी लेकर लौटता, जैसे कि उसका दाँत, उसकी मूँछ के बाल या उससे लगी खरोंच भी—वह राजाधिकारी बन सकता था और "बाघ की अनुमति" से गाँव पर राज्य कर सकता था। उसकी दादी माँ ने बताया था कि पुराने समय के नेतृत्वकर्ता उस महाबलशाली जानवर का आवाहन करते थे और उनका यह विश्वास था कि कल्याणकारिता, पराक्रम व बल जैसे, बाघ के अद्वितीय गुणों को अपनाने से उन्हें शासन करने के लिए मार्गदर्शन मिलेगा।

इस कहानी को सच मानकर वह युवक आज रात अपना जीवन दाँव पर लगाने जा रहा था। हालाँकि अब एक भी ऐसा व्यक्ति जीवित नहीं था जिसने उस दैवी जानवर को देखा हो, फिर भी युवक की दादी माँ के साथ-साथ गाँव के बड़े-बुज़ुर्गों को पूरा विश्वास था कि उनके लोगों पर बाघ की संरक्षणभरी दयादृष्टि है। *मुझे बाघ को ढूँढ़ना ही होगा, नहीं तो हम सबका अन्त हो जाएगा,* उस युवक ने सोचा।

सफल होने का दृढ़निश्चय मन में लिए, वह युवक सिपाहियों की तैनाती बदलते समय, वहाँ से चुपके-से निकल गया क्योंकि राजा का आदेश था कि अब कोई भी 'टाइगर माउन्टेन' की चढ़ाई न करे। भागकर वह उस झोपड़ी में पहुँचा जहाँ वह अपनी दादी माँ के साथ रहा करता था ताकि वह अपनी कटार, मशाल और दादी माँ का आशीर्वाद ले सके।

उन्हें अपनी योजना के बारे में बताने के बाद वे दोनों कुछ पलों के लिए मौन में खड़े रहे—उसके निर्णय की गम्भीरता को वातावरण में महसूस किया जा सकता था।

उस दयाशालिनी वृद्धा ने अपने पोते के चेहरे पर प्यार-से हाथ फेरते हुए, दृढ़ता से कहा, "मेरे बच्चे, अब समय है, साहस दिखाने का।" चेहरे पर बिखरी मुस्कान के साथ उसने कहा, "याद रखो, जो दिल से योद्धा होता है, वही सच्चा योद्धा है। हिम्मत रखो!" उसने अपने पोते को गले लगाया और कहा, "मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। भगवान करे, तुम्हें बाघ के दर्शन हों!" फिर वह

अभिमान से देखती रही; हाथ में जलती मशाल लिए उसका पोता, उसकी आँखों के सामने वन में ओझल हो गया।

यात्रा कठिनाइयों से भरी थी। जब उस युवक ने पहाड़ पर चढ़ना आरम्भ किया तो राजा और उसके सिपाहियों की बर्बरता के ख़िलाफ़ उसके मन में भरे गुस्से का आवेग यात्रा में कुछ दूरी तक उसकी ताक़त बना रहा। वह झाड़ियों को रौंदते हुए घने जंगल के बीच से अपना रास्ता बनाता हुआ जा रहा था, अपनी कटार से बेलों को काटते हुए तेज़ी-से आगे बढ़ रहा था, मानो उसका हर प्रहार किसी न किसी तरह उन सभी अत्याचारों को समाप्त कर देगा जो उस पर और अन्य गाँववालों पर सख़्ती से किए जा रहे थे।

अपने आक्रामक गुस्से के आगे उस युवक को हवा या पेड़ों का कराहना या उन नन्हे जानवरों की घबराहट के आर्तस्वर सुनाई ही नहीं दे रहे थे जो उसके गुस्से के प्रकोप से डरकर जंगल में इधर-उधर भाग रहे थे।

अन्ततः वह रुका, उसका गुस्सा कुछ ठण्डा हो चुका था और उसका आवेश कम हुआ था। उसने आस-पास नज़र दौड़ाई तो उसे दिखाई दीं—टूटी हुई टहनियाँ जो लटक रही थीं, और वह उजड़ा हुआ कँटीला रास्ता जिस पर वह इतना उपद्रव करते हुए, उग्रता से मार्ग बनाते हुए चला आ रहा था। यह सब देखकर उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। उसने सोचा, *मैंने अपने गुस्से में इतने सारे पेड़-पौधों को चोट पहुँचाई, पर इससे मुझे मिला क्या? आगे बढ़ने का यह तो कोई तरीक़ा नहीं है!*

वह घुटनों के बल वहीं बैठ गया। धरती माँ से क्षमा माँगते हुए, उसने अपनी कटार उन्हें अर्पित कर दी और उसे वहीं जंगल में छोड़कर आगे बढ़ा। उसने प्रार्थना की, *मुझे सही दृष्टि प्रदान करें . . .ताकि मैं सच्ची कल्याणकारिता से देखूँ।*

अब, वह युवक बड़े ध्यान से, निरीक्षण करते-करते आगे बढ़ने लगा—उसके सामने जो कुछ आता, उसे वह सावधानी से देखता जाता, पेड़-पौधों के बीच में से उसे जैसे-जैसे एक नैसर्गिक रास्ता दिखाई देता, उस पर चलते-चलते वह पहाड़ की चोटी की ओर बढ़ता गया।

कुछ देर बाद, उसे लगा कि उसने किसी मुलायम-सी चीज़ पर पैर रख दिया है। मशाल की धीमी होती रोशनी को सामने लाकर, वह नीचे झुका और ज़मीन पर देखने लगा। देखते ही उसके शरीर में बिजली-सी दौड़ गई, क्योंकि वहाँ नीचे गुदगुदी घास में बड़े-से पंजे का निशान था। क्या यह बाघ के पंजे का हो सकता है? और तभी, उसकी मशाल बुझ गई; वह घोर अन्धकार से घिर गया। डर के मारे उसका शरीर ठण्डा पड़ने लगा।

जंगल की कर्कश आवाज़ें कानों में चुभने लगी थीं और उसके मन में उलटे-सीधे विचार आने लगे थे : *बाघ आ गया तो मैं क्या करूँगा? मेरे पास तो कटार भी नहीं है, मशाल भी नहीं, मैं बिल्कुल निहत्था हूँ। अगर बाघ ने मुझे दबोच लिया तो?* हर एक आवाज़, पत्ते की हर सरसराहट में उसे संकट का संकेत लगने लगा। वह ठीक से साँस भी नहीं ले पा रहा था। इसी घबराहट में उसने ऊपर देखा तो उसे हल्की-सी चाँदनी की झलक दिखाई दी और दादी माँ की प्रेरणादायी आवाज़ सुनाई दी। "जो दिल से योद्धा होता है, वही सच्चा योद्धा है। हिम्मत रखो!"

उनके शब्दों से मार्गदर्शन पाकर, हिम्मत जुटाकर वह युवक पहाड़ पर ऊपर की ओर बढ़ने लगा। उसने प्रार्थना की, *मैं सही तरीक़े से सुनूँ और पराक्रम पाऊँ।* कई घण्टे बीत गए, वह आगे बढ़ता जा रहा था। चलते-चलते, जो पत्तियाँ उसके शरीर से रगड़ती जा रही थीं, उनमें से उसे अब दादी माँ की आवाज़ की गूँज सुनाई देने लगी थी। वे पत्तियाँ फुसफुसा रही थीं, *हिम्मत रखो। हम तुम्हारे साथ हैं।* उसकी साँसें सहजता से चलने लगीं। उसके दिल को भी चैन आया। अब वह जंगल की ध्वनियों को एक बाधा के रूप में नहीं, बल्कि एक सहचर—एक मित्र के रूप में सुनने लगा। उसे अपने हर क़दम के साथ आश्वासन मिल रहा था, और बाघ को खोजने का उसका निश्चय और भी दृढ़ हो गया।

वह और भी तेज़ी-से चलने लगा, जैसे-जैसे वह तेज़ गति से ऊपर चढ़ता जा रहा था, उसके अन्दर आह्लाद का भाव भी बढ़ने लगा। उसे अपने अन्दर और भी साहस महसूस होने लगा। उसने सोचा, *मैं सचमुच यह कर रहा हूँ। वास्तव में, मैं एक योद्धा हूँ! मेरे लौटने पर न जाने वे सभी लोग किन-किन तरीक़ों से मेरी प्रशंसा करेंगे। मेरा आदर-सत्कार होगा। हो सकता है मैं राजा ही बन जाऊँ!* ऐसा ही चलता रहा, उसके मन में अपनी प्रशंसा भरे विचारों का ताँता लगा रहा। बड़ा खुश होकर वह ज़ोर-ज़ोर-से हँसने लगा। भविष्य में मिलने वाली प्रशंसा के विचारों से वह इतना विचलित हो गया कि रास्ते में पड़े एक पेड़ के तने से टकराकर मुँह के बल गिर गया।

तभी उसे एक ज़ोर की दहाड़ सुनाई दी, इतनी ज़ोर की कि उसने युवक के अहंकार की ख़याली दुनिया को हिलाकर रख दिया—मेघगर्जन जैसी उस दहाड़ ने उसकी हड्डियों तक को झकझोर दिया और वह गर्जना उस युवक को वर्तमान क्षण में ले आई। युवक को कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, परन्तु उसे पता था कि बाघ कहीं नज़दीक ही है। वह बाघ के संरक्षण की छत्रछाया में आना चाहता था, उसने अपने हृदय की गहराई से प्रार्थना की, *मैं सच्ची विनम्रता के बल के साथ सही तरीक़े से आपकी पूजा करूँ।*

वह खड़ा हुआ और सँभल-सँभलकर आगे बढ़ने लगा, उसके श्वास की गति स्थिर थी, केन्द्रण लक्ष्य पर जमा हुआ था। अब वह चोटी के निकट था, और उसकी हर एक हरकत महत्त्वपूर्ण थी। उसने बस एक आख़िरी क़दम लिया और वह घने जंगल को पार कर आ पहुँचा—सुदूर तक फैले हुए खुले आकाश तले। आकाश के अनन्त विस्तार से नीचे झरती चाँदनी सब ओर उजाला बिखेर रही थी।

चाँदनी के प्रकाश में, जब उसने सब ओर देखा तो वह विस्मयाभिभूत रह गया; उसने देखा कि वह स्थान सब ओर से पेड़ों से घिरा हुआ है और हर टहनी पर—हर पत्ते पर—ऊपर से लेकर नीचे तक, छोटे-बड़े हर आकार व रूप के और हर रंग के जीव बैठे हैं, लेटे हैं या फिर लटक रहे हैं। वन के सभी जीव एक मौन सभा में एकत्रित हुए थे। वे मासूम-सी दृष्टि से उसी की ओर एकटक देख रहे थे।

और वहाँ, मैदान के बीचोबीच बैठा था, महामहिमावान और गरिमावान, विशाल सफ़ेद बाघ—अतीव वैभव, महाबल और स्थिरता व शान्ति का जीता-जागता स्वरूप। चाँदनी में उस बाघ की खाल संगमरमर जैसी चमकीली सफ़ेद लग रही थी। उसकी आँखों का तेज युवक की सत्ता को भेदकर उसके अन्तरतम स्थान तक प्रवेश कर गया।

बाघ की दृष्टि ऐसी थी कि उस युवक ने आज तक ऐसा अनुभव पहले कभी नहीं किया था। उसकी सारी दुर्बलता विलीन हो गई; सारा सन्देह मिट गया। उसका सम्पूर्ण अस्तित्व महाप्रशान्ति से सराबोर हो गया। उसे महसूस हुआ कि उसकी सम्पूर्ण सत्ता पराक्रम और श्रद्धा से व्यापक हो गई है—खुद अपने आप में श्रद्धा और अपने अन्तरतम की गहराई में वह जो था, उसमें श्रद्धा।

अनायास ही उसका हाथ उसके हृदय पर आ गया। उसने अपनी आँखें बन्द कीं और सम्मान व कृतज्ञता से अपना सिर झुकाया। बहुत देर तक वह युवक इसी तरह सिर झुकाए रहा, अपने मन की आँखों से उस बाघ के दर्शन करता रहा, उसके सान्निध्य में स्नान करता रहा और बाघ के गुणों को महसूस करता रहा—बाघ की कल्याणकारिता, उसका पराक्रम और बल—जो उस युवक के भीतर आलोकित हो उठे।

जब उसने सिर उठाकर देखा तो बाघ जा चुका था। उसने आस-पास देखा और पाया कि पूरे मैदान में वह अकेला है। क्या उसे सपने में यह दृष्टान्त हुआ था? सब कुछ कितना वास्तविक लगा था! उसके मन में वह भाव अब भी था—और वह वास्तविक *था*। वह आनन्द और एक नए उद्देश्य की भावना से भर गया। निश्चित ही, अब वह अपने गाँव को बचाने में समर्थ था।

मगर रुको! उसने सोचा, *मेरे पास तो बाघ की मूँछ का बाल, उसका दाँत या उसका कोई भी निशान नहीं है।*

फिर भी क्या उसे पावन बाघ के दर्शन से आशीर्वाद नहीं मिला था? क्या गहनतम महामौन में उनके दिलों ने एक-दूसरे से बात नहीं की थी?

उसे पता था कि अब उसे क्या करना है. . .

वहाँ नीचे राजधानी में चौराहे पर पुराना राजा लोगों की पहुँच से बहुत ऊँचाई पर, सोने के सिंहासन पर बैठा था और उसे ताक़त मिल रही थी, उन सैनिकों से जो उसे घेरे हुए खड़े थे; अपनी-अपनी तलवारों की नोक को निहत्थे गाँववालों की ओर तानकर, वे राजा को घेरे हुए खड़े थे। "क्या कोई है जो आज इस अयनान्त के दिन मुझे चुनौती देने का साहस कर सकता है?" राजा मज़ाक़ उड़ाते हुए हँसकर बोला। प्रजा बैचेन कर देने वाले डरावने-से सन्नाटे के बीच चुपचाप खड़ी थी। "मुझे नहीं लगता!" राजा बोला।

"ठहरो!" भीड़ में, पीछे से एक आवाज़ आई। "मैंने देखा है बाघ को! मैं पहाड़ पर चढ़कर गया था और मैंने उसे देखा है जो वहाँ रहता है। मैं दावा करता हूँ कि मुझे बाघ की आज्ञा मिली है!"

गाँववाले अवाक् रह गए, और यह देखने के लिए मुड़े कि कौन है जो ऐसा कह रहा है।

युवक आगे बढ़ा, उसकी आँखों में एक चमक थी, नई शक्ति और अधिकार की चमक।

युवक को देखकर, राजा का उपहास, घृणा में बदल गया। "अच्छा!" उसने कहा। "तुम तो अभी बच्चे हो! और मुझे तुम्हारे ऊपर कोई निशान भी नहीं दिख रहा है। हमें निशान दिखाओ—या तुम्हारे पास कोई सबूत है ही नहीं?"

बाघ की छवि का स्मरण करते हुए और उस छवि को अपने अन्दर समाए हुए, युवक भीड़ में से सामने आ गया। राजा की ओर देखते हुए, उसने कहा, "हम एक हैं। मैंने उसे देखा है।"

अब राजा भयभीत हो गया, उसे युवक की आँखों में कुछ ऐसा दिखा जिससे वह घबरा गया। पुराना राजा तुरन्त खड़ा हो गया और चिल्लाया, "ले जाओ इस बग़ावत करने वाले को यहाँ से! इसने राजाज्ञा का उल्लंघन कर पहाड़ पर चढ़ने का अपराध किया है!"

सिपाही अपना-अपना भाला लेकर आगे बढ़े, परन्तु बाघ की गति उनसे भी तेज़ थी—बिजली से भी तेज़। विशाल सफ़ेद बाघ—'टाइगर माउन्टेन' का वह महामहिमावान जानवर—सिपाहियों और उस युवक के बीच झपट पड़ा, उसने अपने नुकीले-पैने पंजे राजा की ओर बढ़ाए और इतनी ज़ोर-से गर्जना की कि उसकी गूँज गाँव की सीमा तक फैल गई। भय से काँप उठे सिपाही अपने हथियार

फेंककर, दुम दबाकर गाँव से भाग गए। और पुराना राजा जो अपने सिंहासन के पीछे छिप गया था, वहाँ से इतनी दूर भाग गया कि फिर कभी नज़र नहीं आया।

युवक सिंहासन पर आसीन होने के लिए आगे बढ़ा। गाँववाले आश्चर्य और आनन्द से देख रहे थे, उस युवक को जिसे वे जानते थे और इतना प्यार करते थे; अब वह उनका राजा बन गया था। पावन बाघ अब उसके पैरों के पास बैठ गया और उसने अपनी मूँछ का एक लम्बा बाल युवक को दे दिया। और फिर जितनी फुर्ती से वह आया था, उतनी ही तेज़ी-से वह महामहिमावान सफ़ेद बाघ गाँव के बाहर जंगल में ओझल हो गया।

सहज ही, गाँववाले जयजयकार करने लगे, उनके हृदय से खुशियों के गीत अपने आप फूटने लगे। युवा राजा ने घोषणा की कि शाही गोदाम के ताले खोल दिए जाएँ और अनाज व जड़ी-बूटियाँ छोटे-बड़े, सभी लोगों को बाँट दी जाएँ। फिर, एक स्पष्ट और बुलन्द, गुंजायमान आवाज़ में उसने घोषणा की, “बाघ की रीति-नीति पुनः स्थापित हो गई है!”

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।